15 अक्टूबर

15 अक्टूबर

प्राणिविज्ञान विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा जैविक खेती विषय पर आयोजित राष्ट्रीय किसान जागरूकता कार्यक्रम

किसान जागरूकता कार्यक्रम में माननीय कुलपति जी

कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह जी महिला किसान को खाद सामग्री वितरित करते हुए

15 अक्टूबर

राष्ट्रीय किसान जागरूकता कार्यक्रम–जागृति 2019

फसलों में केमिकल के इस्तेमाल से संकट में केंचुओं का अस्तित्व

जमीन में पोषक तत्वों की हो रही कमी, चरगांवा -पिपरौली में स्थिति चिंताजनक

राजन राय

गोरखपुर। फसलों से खरपतवार खत्म करने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे केमिकल से केंचुओं के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो गया है। जिले की कृषि योग्य मिट्टी में केंचुओं की संख्या 70 से 80 फीसदी तक कम हो गई है।

सबसे ज्यादा चिंताजनक स्थिति चरगांवा और पिपरौली ब्लॉक में है। यहां केंचुए तो कम हुए ही हैं जो बचे हैं उनमें अंडे बनाने की क्षमता भी घट गई है। इससे फसल के अपशिष्ट की रीसाइक्लिंग नहीं हो पा रही है। मिट्टी में पोषक तत्वों (नाइट्रोजन, फास्फोरस, कैल्शियम) की मात्रा भी 40 से 50 फीसदी कम हो गई है। इसका सीधा असर पैदावार पर पड़ा है।

गेहूं और धान की उपज प्रति एकड़ दो कुंतल तक कम हुई है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान के शिक्षक डॉ. केशव सिंह और रिसर्च स्कालर वंदना सिंह के शोध में ये तथ्य सामने आए हैं। शोध में पाया गया है कि जिस मिट्टी में जैविक खाद का इस्तेमाल हुआ, वहां पोषक तत्व ज्यादा हैं। मिट्टी में केंचुए की संख्या भी अधिक पाई गई। जहां खरपतवार नाशी रसायन का छिड़काव किया गया है वहां पोषक तत्वों की मात्रा काफी कम हो गई है। डॉ केशव सिंह बताते हैं कि केंचुए बायो इंडीकेटर हैं। उनकी संख्या देखकर ही मिट्टी के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। केमिकल के इस्तेमाल से मृदा इको सिस्टम का बैलेंस खराब हो गया है। बताया कि, केंचुए फसल से निकलने वाले अपशिष्ट की रिसाइक्लिंग करते हैं। इनकी आंत में सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। जो फसल के अपशिष्ट को केंचुए की आंत में ही पौधों के अवशोषण के लायक बना देते हैं।

डॉ. केशव सिंह।

केंचुआ की उपयोगिता

- ये मिट्टी भुरभुरी बनाए रखते हैं जिससे मृदा में आक्सीजन की आवश्यक मात्रा बनी रहती है। जमीन के पोला होने से जल अवशोषण क्षमता बढ़ जाती है। बारिश होने पर पानी जमीन में एकत्र हो जाता है।
- खेत में कार्बनिक पदार्थ को खाकर उसके विघटन में सहयोग करते हैं।
- केंचुए की त्वचा से उत्सर्जित पदार्थ पेड़ पौधों की वृद्धि में सहायक होते हैं।

परीक्षण का तरीका

खेत में एक फीट गहरी खुदाई कर मिट्टी निकाली गई। इसे लैब में लाकर पाट में डाला गया और उसमें घास उगाई गई। इसमें खरपतवार नाशी रसायन का छिड़काव 10-10 दिन के अंतराल पर किया गया। 20-20 दिन बाद तीन बार परीक्षण किया गया। पाया गया कि केंचओं की संख्या घट गई। केंचुए पर कूकन (हल्के काले रंग की पट्टी) की संख्या भी कम हो गई। कूकन घटने से अंडे की संख्या भी घटती गई।

इन इलाकों में किया गया शोध

बेलघाट, उरुवा, खजनी, चरगांवा, पिपरौली, बघौली, संतकबीरनगर

मिट्टी में पोषक तत्वों की गिरती मात्रा से प्रति एकड़ पैदावार में दो क्विंटल तक आई कमी

OFFICE
केंचुआ
कम्पो

जैविक खाद के प्रयोग से सेहतमंद होगा खाद्यान्न

मंगलवार को विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग में आयोजित किसान जागरूकता कार्यक्रम को कुलपति प्रोफेसर विजय कृष्ण सिंह ने संबोधित किया। • हिन्दुस्तान

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

दीक्षांत सप्ताह

- कुलपति ने किसानों को भेंट की वर्मीकम्पोस्टिंग केंचुआ की प्रजाति
- दीक्षांत सप्ताह के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

डीडीयू में दीक्षांत सप्ताह के तहत मंगलवार को प्राणि विज्ञान विभाग एवं एनएसएस की ओर से 'जैविक खेती : वर्मी कंपोस्ट तथा जैविक कीटनाशकों का उत्पादन एवं प्रयोग' विषयक किसान जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि गुरुनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के प्रो. आदर्श पाल विग ने कहा कि जैविक खेती में हम जैविक खादों तथा कीटनाशकों का ही प्रयोग करते है। इसके प्रयोग से उत्पन्न खाद्यान्न प्रदूषण मुक्त होते हैं।

प्रो.विग ने जैविक अपशिष्ट प्रबंधन के विषय में विस्तार से अपनी बात कही। उन्होंने कहा कि वर्मीकंपोस्ट का उत्पादन करके हम अपने आसपास के जैविक अपशिष्टों का कुशल प्रबंधन कर सकते है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बीके सिंह ने कहा कि जैविक खेती आज की जरूरत है। इसके लिए पशुपालन को बढ़ावा देना जरूरी है। अनुश्रवण समिति संयोजक प्रो राजवंत राव ने खेती के साथ सब्जी व फल की खेती, कीट वैज्ञानिक प्रो. सीपीएम त्रिपाठी फसलों पर लगने वाले हानिकारी कीटों से नुकसान और बचने की जानकारी, रेशम कीट वैज्ञानिक प्रो. विजय बहादुर उपाध्याय ने रेशम कीट पालन से कम खर्च में ज्यादा मुनाफा का तरीका बताया। डॉ. केशव सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर जंतु वैज्ञानिक डॉ. जसविन्दर सिंह, प्रति कुलपति प्रो. हरी शरण, प्रो अजय सिंह, प्रो. वीना बत्रा कुशवाहा, प्रो. पीएच पाठक, प्रो.रविकांत उपाध्याय, डॉ. एसके तिवारी, डॉ. आरपी यादव आदि रहे।

डॉ.केशव सिंह की पुस्तक का लोकार्पण: कार्यशाला के दौरान अतिथियों ने डॉ केशव सिंह की पुस्तक 'वर्मीकम्पोस्टिंग: अपशिष्ट प्रबंधन एवं स्वरोजगार' तथा वर्मीकंपोस्टिंग विवरणिका का लोकार्पण किया। कुलपति ने किसानों को वर्मीकम्पोस्टिंग केंचुआ की इसेनिया फेटिडा प्रजाति भेंट की।

जैविक खेती पर संगोष्ठी १५ को

गोरखपुर,१२ अक्टूबर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के 38वें दीक्षान्त समारोह सप्ताह के अन्तर्गत 15 अक्टूबर को पूर्वाह्न 11:00 बजे प्राणि विज्ञान अनुसंधानशाला सेमिनार कक्ष में ''जैविक खेती: वर्मीकम्पोस्ट तथा जैविक कीटनाशकों का उत्पाद एवं प्रयोग'' विषयक संगोष्ठी किसानो के लाभार्थ प्राणी विज्ञान विभाग तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रो. अजय सिंह, अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग तथा डॉ. केशव सिंह, आयोजन सचिव बताया कि विश्वविद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए समाजोपयोगी शोध् कार्यो को ''लैब टू लैंड'' सिद्धान्त के अन्तर्गत किसानों तक पहुँचाने का काम कर रहा है। रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों के अंधाधुन्ध प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति छिड़ हो रही है तथा उसका बुरा असर हमारे जीव-जन्तुओं, पर्यावरण तथा मनुष्य जीवन पर पड़ रहा है। केचुंओं की सहायता से जैविक अपशिष्टों के कुशल प्रबन्धन द्वारा जैविक खाद (वर्मीकम्पोस्ट) का उत्पादन प्रयोग तथा बाजार में बेचकर कोई भी बेरोजगार व्यक्ति स्वत: रोजगारीत हो सकता है।

इन्हीं उद्देश्यों के अन्तर्गत किसान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य किसान बन्धुओं को जैविक खेती से होने वाले लाभ के बारे में जागरूक करके, जैविक खेती को बढ़ावा देना है। जैविक खेती के लिए पशुपालन बहुत ही जरूरी है, इसके द्वारा होने वाले लाभ के बारे में किसान बन्धुओं को जागरूक किया जायेगा। संगोष्ठी की अध्यक्षता माननीय प्रो. विजय कृष्ण सिंह, कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर करेगें। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. आदर्श पाल विग, पूर्व विभागाध्यक्ष, डिपार्टमेण्ट ऑफ बोटेनिकल एण्ड इनवाइसमेन्टल साइन्सेस, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब तथा विशिष्ट अतिथिगण प्रो. सी.पी.एम. त्रिपाठी, कीट वैज्ञानिकय प्रो. विजय बहादुर उपाध्याय, रेशमकीट वैज्ञानिक, डॉ. जसविन्दर सिंह, जन्तु वैज्ञानिक, प्राणि विज्ञान विभाग, खालसा कालेज, अमृतसर, पंजाब हैं।

आज का दिन 1821 में मैक्सिको को स्वतंत्रता मिली।

हिन्दुस्तान

गोद लिए गांव बालापार पहुंचे डीडीयू के कुलपति ने किया वादा, स्वच्छता, शिक्षा व स्वास्थ्य जागरूकता के चलेंगे कार्यक्रम

किसानों को जैविक खेती सिखाएगा डीडीयू

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

गोद लिए गांव बालापार पहुंचे डीडीयू के कुलपति प्रो. वीके सिंह व विशेषज्ञों ने ग्रामीणों से वादा किया कि वह समय-समय पर गांव आकर बच्चों के सर्वांगिण विकास के लिए गांव के लोगों को जागरूक करेंगे। किसानों को जैविक खेती व आर्थिक समृद्धि लाने वाली उपज लेने के तरीके सिखाएंगे। एनएसएस समन्वयक ने वादा किया कि यहां वर्ष भर स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन, शिक्षा व स्वास्थ्य जागरुकता के कार्यक्रम चलाएंगे।

राजभवन के निर्देश पर डीडीयू ने पांच गांवों को गोद लिया है। इनमें बालापार भी शामिल है। गुरुवार को कुलपति के नेतृत्व में डीडीयू की टीम बालापार पहुंची। स्वच्छता, आपदा प्रबन्धन, अपशिष्ट प्रबन्धन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय अपनी शैक्षिणिक गुणवत्ता बढ़ाने के साथ समाजोपयोगी कार्यों को आगे बढ़ा रहा है। हम गांवों में शिक्षा, स्वच्छता, आपदा प्रबन्धन, अपशिष्ट प्रबन्धन तथा स्वास्थ्य के साथ सामाजिक समरसता के लिए जागरूकता कार्यक्रम पूरे वर्ष चलाकर लोगों को जागरूक करेंगे। गोद लिए गांवों की प्रत्येक समस्या के समाधान हेतु सदैव तत्पर रहेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कीट वैज्ञानिक प्रो. सीपीएस त्रिपाठी ने कीट प्रबन्धन हेतु रसायनिक कीटनाशकों के प्रयोग को बन्द करके जैविक कीटनाशकों से कीट प्रबन्धन के उपाय बताए। रसायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से जीव-जन्तुओं के साथ मानव स्वास्थ्य तथा वातावरण पर पड़ रहे बुरे असर की जानकारी दी।

जैविक कीटनाशक नीम का तेल एवं पत्ती, लहसुन, तम्बाकू आदि पौधो के पत्तियों का जलीय मिश्रण को खेतों में छिड़कने से हानिकारक कीटों का उचित प्रबन्धन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय गांवों में मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन, पशुपालन, वर्मीकम्पोस्टिंग आदि से जोड़ कर लोगों की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए कार्य करता रहेगा। विशिष्ट अतिथि प्रति कुलपति प्रो. हरी शरण ने कहा कि भारत गांवों का देश है। इसका विकास ही विश्वविद्यालय का कर्म एवं धर्म है।

कुलपति प्रो. वीके सिंह के साथ गुरुवार को गोद लिए गांव बालापार पहुंची डीडीयू टीम।

पाठ्य सामग्री व डस्टबिन वितरित

कुलपति ने विवि की ओर से प्राथमिक विद्यालय बालापार प्रथम, द्वितीय तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय के बच्चों को पाठ्य सामग्री, फल एवं स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित 'व्यक्तित्व का विकास' नामक पुस्तक भेंट की। साथ ही स्वच्छता के लिए तीनों विद्यालयों में विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर डस्टबीन भेंट किया गया। गांव के प्रधान रघुनाथ सहाय पाण्डेय ने विवि व कुलपति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। संचालन डॉ. मनीष पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुग्रीव यादव, अवन्तिका सिंह, राकेश शर्मा, नीलम वर्मा, प्रज्ञा अमृत, आराधना राय, अनिता राय, प्रधानाध्यापिका निरूपमा सिंह, अजरा निगार, आशा सिंह, संगीता सिंह, पूर्व मावि की प्रधानाध्यापिका सुनीता अग्रहरी, कल्पना रस्तोगी, कंचन, सीमा वर्मा, शरद के साथ-साथ कौशलेन्द्र पाण्डेय, अंगद शर्मा सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी भी उपस्थित रहे।

स्वच्छता के लिए प्रेरित किया

विशिष्ट अतिथि रूसा समन्वयक प्रो. राजदन्त राव राष्ट्रीय सेवा योजना की सराहना की। ग्रामीणों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। मनोविज्ञान विभाग के प्रो. धनजय कुमार ने गांव के लोगों को मानसिक रोगों के बारे में विस्तार से समझाया तथा कहा कि हम बराबर गांव में आकर बच्चों का मानसिक विकास कैसे हो इसके लिए कैंप करते रहेंगे। बच्चों का बेहतर व्यक्तित्व कैसे हो इसके लिए विभिन्न उपायों पर विस्तृत चर्चा की।

किसानों को दी जाएगी जैविक खेती की जानकारी

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के 38वें दीक्षा समारोह सप्ताह के अंतर्गत 15 अक्टूबर को सुबह 11 बजे प्राणि विज्ञान अनुसंधानशाला सेमिनार कक्ष में संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। जैविक खेतीः वर्मी कंपोस्ट व जैविक कीटनाशकों का उत्पाद एवं प्रयोग विषय पर आयोजित संगोष्ठी में किसानों को जैविक खेती की जानकारी दी जाएगी। यह आयोजन प्राणि विज्ञान विभाग व राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है।

यह जानकारी प्राणि विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. अजय सिंह व रासेयो समन्वयक डा. केशव सिंह संयुक्त रूप से दी। वे शनिवार को पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में किसानों को निश्शुल्क में वर्मी कंपोस्ट तथा केचुंओं (आइसेनिआ फेटिडा) के साथ-साथ वर्मी कंपोस्टिंग विधि की पुस्तक भी भेंट की जाएगी। संगोष्ठी की अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो.वीके सिंह करेंगे। जबकि मुख्य अतिथि प्रो. आदर्श पाल विग, पूर्व विभागाध्यक्ष, डिपार्टमेंट ऑफ बोटेनिकल एंड एनवायरमेंटल साइंसेस, गुरू नानक देव विवि, अमृतसर, पंजाब तथा विशिष्ट अतिथिगण प्रो.सीपीएम त्रिपाठी, कीट वैज्ञानिक, प्रो.विजय बहादुर उपाध्याय, रेशमकीट वैज्ञानिक, डा.जसविंदर सिंह, जंतु वैज्ञानिक, प्राणि विज्ञान विभाग, खालसा कालेज, अमृतसर, पंजाब होंगे।

डीडीयू के 38वें दीक्षांत समारोह के अन्तर्गत हो रही है संगोष्ठी

दीक्षांत में 15 को जैविक खेती पर होगी संगोष्ठी

आयोजन

- जूलॉजी विभाग व एनएसएस की ओर से आयोजित हुई है गोष्ठी
- 500 से ज्यादा किसानों के भाग लेने की मंजूरी मिली है कार्यक्रम में

जैविक खेती के लिए पशुपालन जरूरी

संगोष्ठी का उद्देश्य किसान बंधुओं को जैविक खेती से होने वाले लाभ के बारे में जागरूक करके जैविक खेती को बढ़ावा देना है। जैविक खेती के लिए पशुपालन जरूरी है। कार्यक्रम में किसानों को नि:शुल्क वर्मीकम्पोस्ट तथा केंचुओं के साथ वर्मी कम्पोस्टिंग विधि की पुस्तक भी भेंट की जायेगी।

डीडीयू वीसी करेंगे संगोष्ठी की अध्यक्षता

संगोष्ठी की अध्यक्षता कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर में डिपार्टमेण्ट ऑफ बोटेनिकल एण्ड इनवायरमेंटल साइंसेज के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.आदर्श पाल विंग तथा विशिष्ट अतिथि कीट वैज्ञानिक प्रो. सीपीएम त्रिपाठी, प्रो. विजय बहादुर उपाध्याय तथा खालसा कॉलेज अमृतसर पंजाब के डॉ. जसविन्दर सिंह होंगे। कार्यक्रम में 500 किसानों ने भाग लेने की मंजूरी है।

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

डीडीयू के 38वें दीक्षान्त सप्ताह के अन्तर्गत 15 अक्तूबर को सुबह 11 बजे प्राणि विज्ञान अनुसंधानशाला के सेमीनार कक्ष में 'जैविक खेती: वर्मीकम्पोस्ट तथा जैविक कीटनाशकों का उत्पाद एवं प्रयोग' विषय पर किसानों के लिए संगोष्ठी होगी। यह आयोजन जूलॉजी विभाग तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से किया जाएगा।

डीडीयू में जूलॉजी विभागाध्यक्ष प्रो. अजय सिंह तथा एनएसएस समन्वयक डॉ. केशव सिंह ने संयुक्त प्रेसवार्ता में शनिवार को यह जानकारी दी। शिक्षक द्वय ने बताया कि डीडीयू समाजोपयोगी शोध कार्यों को 'लैब टू लैंड' सिद्धांत के अन्तर्गत किसानों तक पहुंचाने का काम कर रहा है।

रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति क्षीण हो रही है। इसका बुरा असर हमारे जीव जन्तुओं, पर्यावरण तथा मनुष्य जीवन पर पड़ रहा है। केंचुओं की सहायता से जैविक अपशिष्टों के कुशल प्रबंधन द्वारा जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट) का उत्पादन, प्रयोग तथा बाजार में बेचकर कोई भी बेरोजगार व्यक्ति स्वतः रोजगार कर सकता है। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर किसान जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

OFFICE
वर्मीकम्पोस्ट

जैविक खाद से प्रदूषणमुक्त होते हैं खाद्यान्न : प्रो. विग

अमर उजाला ब्यूरो

कुलपति ने किसानों को भेंट की वर्मीकम्पोस्टिंग केंचुआ की प्रजाति

गोरखपुर। गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के प्रो. आदर्श पाल विग ने कहा कि जैविक खेती में हम जैविक खादों तथा कीटनाशकों का ही प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग से उत्पन्न खाद्यान्न प्रदूषणमुक्त होते हैं। वह गोरखपुर विश्वविद्यालय में दीक्षांत सप्ताह के तहत मंगलवार को 'जैविक खेती : वर्मी कंपोस्ट तथा जैविक कीटनाशकों का उत्पादन एवं प्रयोग' विषयक किसान जागरूकता कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस दौरान डॉ केशव सिंह की पुस्तक ''वर्मीकम्पोस्टिंगः अपशिष्ट प्रबंधन एवं स्वरोजगार'' तथा वर्मीकम्पोस्टिंग विवरणिका का लोकार्पण किया।

कार्यशाला में प्रो विग ने कहा कि जैविक अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में कहा कि वर्मीकंपोस्ट का उत्पादन करके हम अपने आसपास के जैविक अपशिष्टों का प्रबंधन कर सकते है। कार्यशाला कि

जागरुकता कार्यक्रम में पत्रिका का विमोचन हुआ।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. वीके सिंह ने कहा कि जैविक खेती आज की आवश्यकता है। इसके लिए पशुपालन को बढ़ावा देना जरूरी है। अनुश्रवण समिति संयोजक प्रो राजवंत राव ने खेती के साथ सब्जी व फल की खेती, कीट वैज्ञानिक प्रो. सीपीएम त्रिपाठी फसलों पर लगने वाले हानिकारी कीटों के बारे में जानकारी दी।

प्राणि विज्ञान विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना
GO GREEN GO CLEAN
GNDU CAMPUS
SAY NO TO PLASTIC BAGS
50

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
जागृति – 2019
किसान जागरूकता कार्यक्रम

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Vermiwash
collecting
device
SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

जैविक खेती ने सुदृढ़ की आर्थिक स्थिति

युवावस्था से ही धान, गेहूं और गन्ना की खेती करता रहा हूं। आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। एसएचडीए परियोजना के तहत जब बीज, खाद और खाद निःशुल्क उपलब्ध हुई तो गोभी, लहसुन, प्याज, मिर्चा, धनिया, लौकी, नेनुआ सहित अन्य सब्जियों के उत्पादन करने लगा। पिछले तीन वर्षों से वर्मीकम्पोस्ट विधि से तैयार खाद का प्रयोग कर रहा हूं। उत्पादन बढ़ने के साथ आर्थिक लाभ भी बढ़ा है और फसल जल्दी तैयार होने से समय की बचत भी हो रही है। पूर्वांचल के किसानों को भी वर्मीकम्पोस्ट विधि से तैयार जैविक खाद का इस्तेमाल कर समृद्ध बनने का प्रयास करना चाहिए।

– इन्द्रजीत कुशवाहा, किसान गोविन्दपुर कुशीनगर

जैविक खेती से डेढ़ गुना ज्यादा बढ़ी पैदावार

जैविक खेती से डेढ़ गुना ज्यादा पैदावार बढ़ गई है। पशुपालन बड़े पैमाने पर करने के कारण भारी मात्रा में गोबर की उपलब्धता रही है। चार वर्ष पूर्व वर्मीकम्पोस्ट विधि से खाद तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया तो फसलों पर काफी अच्छा प्रभाव देखने को मिला। कुछ दिनों बाद किसानों द्वारा इस खाद की मांग बढ़ गई। आसपास के क्षेत्रों में बाजार में सब्जियां और खाद भी बेचने का कार्य प्रारम्भ कर किया तो आज कार्य दोगुना बढ़ गया है।

- प्रदीप कुमार, किसान तमकुहीराज कुशीनगर

Scanned with CamScanner

विवि एनएसएस द्वारा गोद लिए गये ग्राम पंचायत बालापार में स्थित प्राथमिक विद्यालय में आयोजित जनजागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति प्रो.वीके सिंह साथ में प्रो.सीपीएम त्रिपाठी, प्रो राजवन्त राव व अन्य।

फोटो : एसएनबी

Scanned with CamScanner